Media/LKO/0035

बिज़नेस स्टैंडर्ड लखनऊ | 27 दिसंबर 2014 शनिवार

चीनी की कीमत में गिरावट बनी आफत

वीरेंद्र सिंह रावत
लखनऊ, 26 दिसंबर

उत्तर प्रदेश की चीनी मिलों के लिए राज्य में चीनी की कीमतों में तेज गिरावट चुनौती बन गई है। चीनी का थोक मूल्य इस समय पिछले महीने के 3,000 रुपये प्रति क्विंटल (एक्स-फैक्टरी) से कम होकर 2,750 रुपये प्रति क्विंटल रह गई है। जब राज्य ने 12 नवंबर को राज्य समर्थित मूल्य की घोषणा की थी उस समय चीनी कीमतें 3,000 रुपये प्रति क्विंटल थी। जुलाई 2014 के 3,188 रुपये प्रति क्विंटल के मुकाबले यह कीमत पहले ही कम थी। इस परिप्रेक्ष्य में उत्तर प्रदेश चीनी मिल एसोसिएशन (यूपीएसएमए) ने चीनी के दाम में गिरावट से चीनी उद्योग पर होने वाले असर पर राज्य सरकार को पत्र लिखा है।

यूपीएसएमए ने कहा है कि कम कीमतों के बावजूद चीनी मिलें अत्यधिक कमजोर माहौल और पहले से ही बाजार में पहले से ही चीनी की उपलब्ध होने से अपना भंडार नहीं बेच पा रही हैं। एक दूसरी बड़ी वजह यह है कि कर्नाटक और महाराष्ट्र से आ रही चीनी उत्तर प्रदेश की चीनी मिलों की चीनी के मुकाबले कम उत्पादन लागत की वजह से 200 रुपये प्रति क्विंटल तक सस्ती होती है। इस महीने के शुरू में यूपीएसएमए ने राज्य के चीनी उद्योग संकट में केंद्र से हस्तक्षेप की मांग की थी।

केंद्रीय खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय को लिखे एक पत्र में यूपीएसएमए ने चीनी मिलों पर बकाया रकम और भुगतान में देरी से पैदा होने वाले इस संकट के प्रति आगाह किया था।

इसी बीच, यूपीएसएए ने दोहराया कि महाराष्ट्र में चीनी मिलों को सस्ता गन्ना उपलब्ध होता है और साथ ही अधिक चीनी भी प्राप्त होती है बाजवूद इसके वे गन्ने का उचित एवं लाभकारी मूल्य नहीं दे पाती हैं और उन्होंने अपनी सरकार को उनकी अक्षमता के बारे में बता भी दिया है।

एफआरपी वह कीमत होती है जो चीनी मिलें किसानों को देती हैं। एफआरपी केंद्र सरकार तय करती है। किसानों को और अधिक लाभ देने के लिए कुछ राज्य एमएसपी की घोषणा करते हैं जो एफआरपी के मुकाबले अधिक होता है।

यूपीएसएमए के अनुसार देश में सस्ती चीनी के आयात चीनी निर्यात पर असर पड़ा।